प्रकाशन, सूचना एवं संचार

प्रतिवेदित वर्ष के दौरान परिषद द्वारा इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च तथा जर्नल ऑफ वेक्टर बार्न डिसीजेस का प्रकाशन जारी रखा गया। परिषद के संस्थानों/केन्द्रों द्वारा स्वास्थ्य सूचना के प्रसार के लिए दस्तावेज (डाक्यूमेन्ट्स) भी प्रकाशित किए गए। इसके अतिरिक्त परिषद एवं इसके संस्थानों द्वारा जन-सामान्य एवं वैज्ञानिकों के लाभ के लिए संगोष्ठी, सेमिनार, प्रदर्शनियों, ओपेन हाउसों आदि जैसे कई वैज्ञानिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

नवीन पहल के अंतर्गत परिषद द्वारा लोकप्रिय विषयों पर हिन्दी में आयुर्विज्ञानी पुस्तकों के लिए आई सी एम आर द्विवर्षीय पुरस्कार योजना की शुरूआत की गई।

प्रकाशन

नियतकालिक प्रकाशन

इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च

परिषद द्वारा प्रकाशित मासिक इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आई जे एम आर) को विश्व की वर्तमान सभी प्रमुख जागरूकता और सतर्कता सेवाओं द्वारा सूचीबद्ध करने और सारांश प्रकाशित करने का कार्य जारी रखा गया। वर्ष २००४ से नवीन अनुच्छेदों जैसे-सम्पादकीय, कमेन्टरी तथा सम्पादक को पत्र आदि की शुरुआत की गई है। आई जे एम आर को जनवरी २००४ से इंटरनेट (*www.icmr.nic.in*) पर निःशुल्क फुल टेक्स्ट उपलब्ध करा दिया गया है तथा आई सी एम आर-एन आई सी जैवआयुर्विज्ञान सूचना केन्द्र द्वारा विकसित भारतीय जैवआयुर्विज्ञानी जर्नलों के ऑन-लाइन फुल-टेक्स्ट डाटाबेस medIND में इसे शामिल कर लिया गया है।

प्रतिवेदित वर्ष के दौरान "स्ट्रेप्टोकोक्कस एवं स्ट्रेप्टोकोक्कल अनुसंधान (मई, २००४) पर एक सप्लीमेन्ट तथा भारतीय कैंसर अनुसंधान एसोसिएशन के २४वें वार्षिक सम्मेलन एवं मानव पैपीलोमा विषाणु एवं गर्भाशय ग्रीवा कैंसर पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी (फरवरी २००५) पर एक दूसरा सप्लीमेन्ट प्रकाशित किया गया। "क्षय रोग अनुसंधान" पर अक्टूबर, २००४ में एक विशेष अंक प्रकाशित किया गया।

जर्नल ऑफ वेक्टर बार्न डिसीज़ेस

परिषद के दिल्ली स्थित मलेरिया अनुसंधान केन्द्र द्वारा इसके त्रैमासिक जर्नल जर्नल ऑफ वेक्टर बार्न डिसीज़ेस का प्रकाशन जारी रखा गया।

एन्युअल रिपोर्ट (वार्षिक प्रतिवेदन)

प्रतिवेदित वर्ष के दौरान परिषद की वर्ष २००३-०४ की एन्युअल रिपोर्ट तथा इसके हिन्दी रूपान्तरण-वार्षिक प्रतिवेदन को प्रकाशित किया गया। परिषद तथा इसके संस्थानों की एन्युअल रिपोर्ट परिषद की वेबसाइट (*http://www.icmr.nic.in*) पर उपलब्ध हैं। इस रिपोर्ट के कलेवर एवं प्रस्तुति में उल्लेखनीय सुधार आया है।

परिषद के अन्य नियतकालिक प्रकाशन

परिषद के संस्थानों द्वारा त्रैमासिक एवं मासिक बुलेटिनों का प्रकाशन जारी रखा गया। इनके अतिरिक्त हैदराबाद स्थित राष्ट्रीय पोषण संस्थान द्वारा हिन्दी में लोकप्रिय त्रैमासिक पोषण का प्रकाशन जारी रखा गया।

परिषद के अनियतकालिक प्रकाशन

प्रतिवेदित वर्ष के दौरान परिषद द्वारा टाइप २ मधुमेह के प्रबन्धन हेतु दिशानिर्देश (गाइडलाइन्स फॉर मैनेजमेन्ट ऑफ टाइप २ डाइबिटीज़) का प्रकाशन किया गया।

सूचनाविज्ञान और संचार

जैवआयुर्विज्ञान सूचना

आई सी एम आर-एन आई सी के वेबपेज जिसमें प्रदान की जाने वाली सेवाओं पर विस्तृत विवरण दिया गया है पर २,६०,००० से ज्यादा हिट (लोगों द्वारा देखा गया) देखे गए। वेबपेज *http://indmed.nic.in* को गुगल डाइरेक्टरी द्वारा भारतीय स्वास्थ्य वेबसाइटों में शीर्ष पर रहने वाली वेब साइटों में शामिल रहना जारी रहा तथा वर्तमान में यह प्रथम स्वास्थ्य वेबसाइट है। याहू ग्रुप में एक अनौपचारिक IndMED फोरम दिसम्बर, २००४ में शुरू किया गया तथा पूर्व प्रशिक्षण भागीदारों, सम्पादकों तथा अन्य चिकित्सीय एवं चिकित्सीय प्रयोगशाला पेशेवरों को इस फोरम में शामिल करने के लिए कहा गया। केन्द्र के पेज के माध्यम से इस फोरम को लिंक प्रदान किया गया है तथा इसका प्रशिक्षण कार्यक्रमों को शामिल करते हुए केन्द्र की गतिविधियों की घोषणा के लिए प्रयोग किया जाता है। केन्द्र द्वारा आयुर्विज्ञानी समुदाय की जैव आयुर्विज्ञानी सूचना आवश्यकताओं को प्रदान करना जारी रखा गया।

IndMED डाटाबेस के लिए जर्नलों की इंडेक्सिंग (सूचीबद्ध किया जाना) एक निरन्तर जारी रहने वाली गतिविधि है तथा वर्तमान में इसमें लगभग ३४,००० रिकार्डस शामिल हैं। जैवआयुर्विज्ञानी पीरिआडिकल्स हेतु यूनियन कैटेलॉग जो *http://uncat.nic.in* पर उपलब्ध हैं को ४० से अधिक पुस्तकालयों से नवीनतम होल्डिंग को शामिल करके आधुनिकीकृत (अपडेट) किया गया है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के शीर्षक को परिवर्तित करके जैवआयुर्विज्ञान सूचनापुन:प्राप्ति कर दिया गया तथा जुलाई एवं दिसम्बर २००४ तथा मार्च २००५ में तीन कार्यक्रम सम्पन्न हुए। प्रतिभागी चिकित्सा/प्रयोगशाला कार्य से सम्बद्ध लोग थे तथा इस ४ दिन के कार्यक्रम में गहन हैण्ड्स-ऑन-सत्र शामिल थे। प्रतिवेदित वर्ष के दौरान नई दिल्ली, पुणे एवं चेन्नई में ३ एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। medIND जर्नलों के भागीदारी जर्नलों के सम्पादकों/प्रकाशकों के लिए "डिजीटल लाइब्रेरी एरा में इंडियन बायोमेडिकल जर्नल्स" पर एक ३ दिन की कार्यशाला आयोजित की गई।

विज्ञानमितीय अध्ययन

परिषद के सभी संस्थानों एवं क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्रों को शामिल करते हुए इनके प्रकाशनों के विश्लेषण सहित "आई सी एम आर संस्थानों के २००४ अनुसंधान आउटपुट" नामक वार्षिक दस्तावेज का प्रकाशन किया गया। कैलेण्डर वर्ष २००४ के दौरान आई सी एम आर संस्थानों द्वारा कुल ४५४ शोध पत्र प्रकाशित किए गए। चेन्नई स्थित यक्ष्मा अनुसंधान केन्द्र का ४७ शोध पत्रों के साथ प्रथम स्थान था उसके पश्चात् मुम्बई स्थित प्रतिरक्षारुधिर विज्ञान संस्थान (४६), मलेरिया अनुसंधान केन्द्र, दिल्ली (४१) एवं राष्ट्रीय पोषण संस्थान, हैदराबाद (३०) का स्थान था। कुल ४५४ शोध पत्रों में से ७१.३७% SCI/JCR द्वारा शामिल किए गए, जबकि वर्ष २००३ के दौरान यह प्रतिशत ६४.२७% था। इस श्रेणी में ३२ शोध पत्रों के साथ मुम्बई स्थित प्रतिरक्षा रुधिरविज्ञान संस्थान का प्रथम स्थान था। कुल १५७ JCR/SCI जर्नलों में से, १२२ जर्नलों का इम्पैक्ट फैक्टर (IF) १.०० या इससे अधिक था। SCI/JCR द्वारा शामिल जर्नलों में दि न्यू इंग्लैण्ड जर्नल ऑफ मेडिसिन का इम्पैक्ट फैक्टर सर्वोच्च (३८.५७०) था। परिषद के औसत इम्पैक्ट फैक्टर में २.१८० से २.३६६ का सुधार

Chap_9_Prakashan suchana awam sanchar_176-179.pmd 177 5/24/2006, 3:13 PM

हुआ है। कुल इम्पैक्ट फैक्टर के संदर्भ में शीर्ष के ५ संस्थान क्रमशः राष्ट्रीय हैजा तथा आंत्ररोग संस्थान (७०.००४), प्रतिरक्षा रुधिरविज्ञान संस्थान (६७.९६६), राष्ट्रीय एड्स अनुसंधान संस्थान, पुणे (६५.९७२), राष्ट्रीय विषाणु विज्ञान संस्थान, पुणे (६३.६२२) एवं यक्ष्मा अनुसंधान केन्द्र, चेन्नई (६१.३४१) थे। कोलकाता स्थित राष्ट्रीय हैजा तथा आंत्ररोग संस्थान के इसकी स्थापना के पश्चात प्रकाशित शोध पत्रों का साइटेशन विश्लेषण के साथ विज्ञानमितीय विश्लेषण पूर्ण किया गया।

भारत के जैवआयुर्विज्ञानी जर्नलों की एक डाइरेक्टरी भी तैयार की गई है।

जैवसूचना केन्द्र

वर्ष २००४-०५ के दौरान केन्द्र द्वारा आई सी एम आर के सभी संस्थानों एवं केन्द्रों की नेटवर्किंग की परियोजना पूर्ण कर ली गई। इस परियोजना के अंतर्गत आई सी एम आर के ३२ स्थलों पर लोकल एरिया नेटवर्क (LAN) को प्रतिष्ठापित/आधुनिकीकृत किया गया। एक मेल सर्वर *icmr.org.in* तैयार किया गया तथा इस सर्वर के माध्यम से आई सी एम आर के सभी वैज्ञानिकों को e-mail (ई-मेल) एक्सेस (पहुंच) उपलब्ध कराई गई है। सभी स्थलों (लोकेशन्स) को मेल के लिए ISDN कनेक्शन तथा इंटरनेट एक्सेस (पहुंच) उपलब्ध कराई गई है।

आई सी एम आर की वेबसाइट *http://www.icmr.nic.in* को नियमित रूप से अपग्रेड किया जाता है। जनवरी २००३ के बाद से इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च के फुल टेक्स्ट लेख वेबसाइट पर ऑन-लाइन उपलब्ध कराए गए हैं। मानव एवं जन्तु जैव नीतिविषयक पेजों को भी वेबसाइट पर विकसित किया गया है।

आई सी एम आर के एक्स्ट्राम्युरल एवं इन्ट्राम्युरल अनुसंधान डेटाबेसों को नियमित रूप से अपग्रेड किया जाता है। इन डेटाबेसों का तकनीकी विभागों द्वारा आवेदनों की जांच एवं कार्यवाही प्रक्रिया के लिए प्रयोग किया जाता है।

जैव सूचना केन्द्र द्वारा पुणे स्थित राष्ट्रीय एड्स अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित भारतीय एच आई वी रिपोज़िटरी को देश के विभिन्न भागों से पृथक किए गए एच आई वी विषाणुओं के ऑन-लाइन केटॉलॉग में सम्मिलित किया गया। इस कैटॉलॉग के द्वारा प्रयोगकर्ता को प्रत्येक विषाणु आइसोलेट से सम्बद्ध प्रतिरक्षाविज्ञानी, वर्गिकी एवं चिकित्सीय सूचना उपलब्ध कराई गई है। यह रिपोजिटरी वेब के द्वारा सर्चेबल है तथा अधिकृत प्रयोगकर्ताओं द्वारा आंकड़ों की ऑन लाइन एन्ट्री एवं सम्पादन (एडिटिंग) की जा सकती है। अधिकृत भली भांति विशेषता ज्ञात एच आई वी आइसोलेट्स पर सूचना प्रदान करके एच आई वी/एड्स के क्षेत्र में अनुसंधान करने के इच्छुक वैज्ञानिकों के लिए यह कैटालॉग उपयोगी है।

जैवआयुर्विज्ञान सूचना का प्रसार

हिन्दी दिवस/हिन्दी सप्ताह समारोहों के दौरान परिषद मुख्यालय में सितम्बर २००४ में जीवन शैली एवं स्वास्थ विषय पर एक वैज्ञानिक सेमिनार का आयोजन किया गया। विख्यात चिकित्सकों द्वारा "मोटापा और मधुमेह," "जीवन शैली और हृदय रोग" तथा "आयुर्वेद के दृष्टिकोण से स्वास्थ्य संरक्षण एवं संवर्धन" विषयों पर हिन्दी में व्याख्यान दिए गए।

हिन्दी में लोकप्रिय चिकित्सीय पुस्तकों के लिए आई सी एम आर पुरस्कार

हिन्दी में चिकित्सीय लेखन को लोकप्रिय बनाने एवं बढ़ावा देने के उद्देश्य से इस वर्ष से नवीन पहल के अंतर्गत हिन्दी में लोकप्रिय चिकित्सीय पुस्तकों के लिए आई सी एम आर द्विवार्षिक पुरस्कार जिसमें ५०,००० रुपये का प्रथम, ३०,००० रुपए का द्वितीय एवं

Chap_9_Prakashan suchana awam sanchar_176-179.pmd 178 5/24/2006, 3:13 PM

२०,००० रुपए का तृतीय पुरस्कार शामिल है, की शुरुआत की गई। इसके लिए जैवआयुर्विज्ञानी पृष्ठभूमि के लेखकों द्वारा विगत ३ वर्षों के भीतर मूलरूप से हिन्दी में लिखी पुस्तकों पर विचार किया गया। इन पुरस्कारों के लिए कुल १६ पुस्तकें प्राप्त हुईं। प्रथम पुरस्कार नई दिल्ली स्थित सफदरजंग अस्पताल के डॉ यतीश अग्रवाल को उनकी पुस्तक "डाइबिटीज के साथ जीने की राह", द्वितीय पुरस्कार नई दिल्ली स्थित मौलाना आज़ाद मेडिकल कॉलेज के डॉ मनोज शर्मा को उनकी पुस्तक "स्तन कैंसरः समस्त जानकारी ही लाभकारी" तथा तृतीय पुरस्कार नई दिल्ली के डॉ संजय आहूजा एवं डॉ अपर्णा आहूजा को उनकी पुस्तक ''आंखें: रोग और सावधानियां'' के लिए प्रदान किया गया।